दादाजी का निराला
मैगनीफायिंग ग्लास

दादाजी का निराला
मैगनीफायिंग ग्लास

दादाजी अखबार पढ़ने के लिए बैठे.
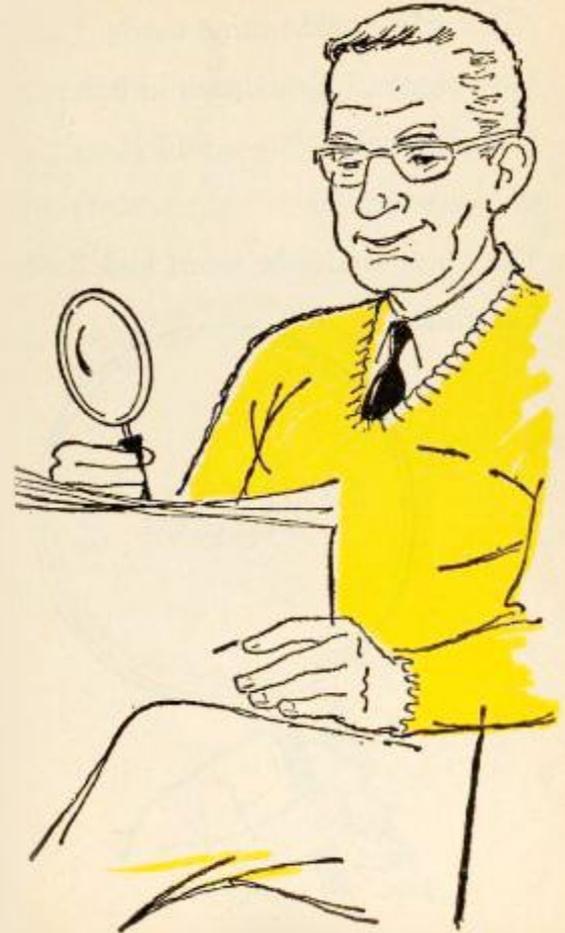
फिर उन्होंने अपनी जेब में से कुछ निकाला.
“दादाजी यह क्या है?” जॉनी ने पूछा.
“यह कांच मुझे पढ़ने में मदद देता है,”
दादाजी ने कहा.
“इससे मेरी बूढ़ी आँखों को
बेहतर दिखाई देता है.”
“पर वो यह कैसे काम करता है?”
जेसी ने जानना चाहा.

“इस कांच से शब्द कुछ बड़े दिखते हैं,”
दादाजी ने जेसी से कहा.
फिर दादाजी ने कांच को कुछ
लिखे हुए शब्दों पर रखा.
कांच से शब्द बड़े होकर ऐसे
दिखने लगे :

“अरे!” जॉनी ने कहा.
“क्या मैं भी एक बार करके देख सकता हूँ?”
जॉनी ने कांच को एक शब्द के ऊपर रखा.
कांच से वो शब्द इतना बड़ा दिखने लगा :

“देखो!” जॉनी ने कहा.
“कांच से मेरा अंगूठा भी बड़ा दिखता है!”

“क्या मैं अब कांच से कुछ देख सकती हूँ,
दादाजी?” जेसी ने विनती की.

जेसी ने भी कांच को अपने
अंगूठे के ऊपर रखा.
उससे उसका अंगूठा
ऐसा दिखने लगा :

फिर उसने कांच को
दादाजी के अखबार के ऊपर रखा.
उसने कांच को एक चित्र के ऊपर रखा.
जेसी को चित्र ऐसा दिखाई दिया :
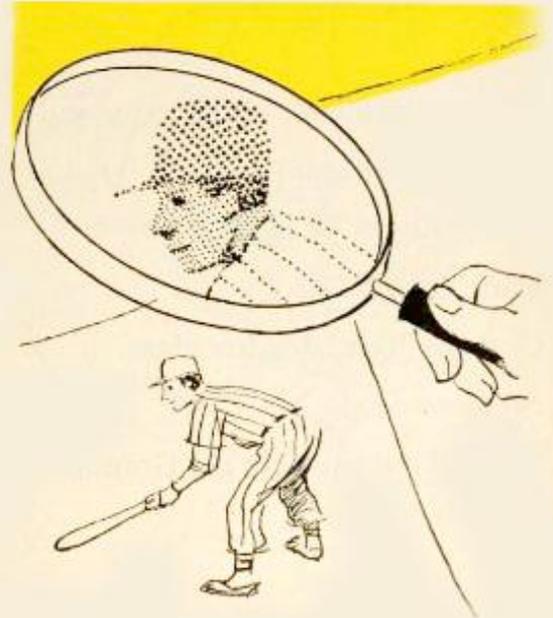
“चित्र असल में काले रंग का
नहीं है!” जेसी ने कहा.
“चित्र बहुत सारी छोटी-छोटी बिंदियों का बना है!”
उसके बाद दादाजी ने कांच वापिस ले लिया.
फिर जेसी की बिंदियाँ भी गायब हो गईं.
“वो बिंदियाँ कहाँ गायब हो गईं, दादाजी?”
जेसी ने पूछा.
दादाजी हँसे.
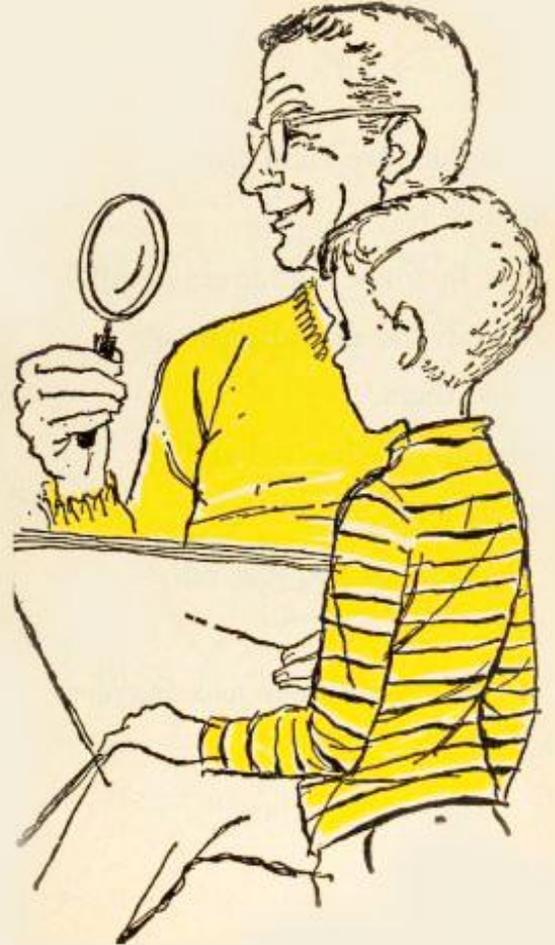
वो बिंदियाँ अभी भी वहां हैं,”
उन्होंने जेसी से कहा.
“पर वे बिंदियाँ बहुत ही छोटी हैं.
उन्हें देखने के लिए तुम्हें उन्हें
बड़ा करना पड़ेगा.”
“बड़ा करना? उसका क्या मतलब?”
जॉनी ने पूछा.
“तुमने अभी वही तो किया था,”
दादाजी ने कहा.
“मेरा कांच चीज़ों को बड़ा करता है.
वो एक मैगनीफायिंग ग्लास है.”

“काश मेरे पास भी एक ऐसा
मैगनीफायिंग ग्लास होता,” जेसी ने कहा.
“देखो, अब तुम दोनों बाहर खेलने
जाओ और मुझे अखबार पढ़ने दो!”
दादाजी ने कहा.

फिर जॉनी और जेसी
बाहर घास में जाकर बैठ गए.
“देखो, घास कितनी हरी है?”
जेसी ने कहा.
“या फिर वो सिर्फ हरी बिंदियाँ हैं?”

जॉनी झट से उठकर खड़ा हुआ.
शायद दादाजी हमें कुछ देर के लिए अपना
मैगनीफायिंग ग्लास दे दें,” उसने कहा.
“तब हम घास को बड़ा करके देख पाएंगे.”
उसके बाद जॉनी दादाजी से पूछने
घर में दौड़कर गया.

पर दादाजी ने उससे कहा,
"उसके लिए तुम्हें
मैगनीफायिंग ग्लास की ज़रुरत नहीं है.
मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि
घास हमेशा हरी ही होती है.
अच्छा, अब तुम दोनों बाहर
जाकर खेलो और मुझे
शांति से अख़बार पढ़ने दो."

जेसी और जॉनी फिर बाहर
जाकर घास में बैठ गए.
वे कुछ बिस्कुट खाने लगे.
"ज़रा उस मक्खी को देखो!"
जेसी ने कहा.
"वो मक्खी क्या कर रही है?
क्या वो मेरा बिस्कुट खा रही है?"

“काश मेरे पास भी एक
मैगनीफायिंग ग्लास होता,” जॉनी ने कहा.
“शायद दादाजी हमें कुछ देर के लिए अपना
मैगनीफायिंग ग्लास दे दें,” जेसी ने कहा.

फिर दोनों घर में दौड़कर गए.
“दादाजी,” जॉनी ने कहा,
“एक मक्खी घास पर बैठी है.
हम देखना चाहते हैं कि वो क्या कर रही है.
क्या हम आपका मैगनीफायिंग ग्लास कुछ
समय के लिए उपयोग कर सकते हैं?”
“अच्छा तो फिर तुम उस मक्खी
पर जासूसी करना चाहते हो,” दादाजी ने कहा.
“अच्छा, कुछ समय के लिए मेरा
मैगनीफायिंग ग्लास ले लो.
पर जल्दी ही उसे वापिस करना.”

फिर जॉनी ने मैगनीफायिंग ग्लास
मक्खी के ऊपर रखा.
जेसी ने भी देखा.
उन्हें यह दिखाई दिया :

“वो मक्खी मेरा बिस्कुट का टुकड़ा
खा रही है,” जेसी ने कहा.
“मुझे मक्खी की आँख दिख रही है!”
जॉनी ने कहा.

“जॉनी! जेसी!”
दादाजी ने पुकारा.
“मुझे मेरा मैगनीफायिंग ग्लास वापिस दो!”
“आपका धन्यवाद,” जॉनी ने कहा.
“वो मक्खी बिस्कुट खा रही थी!”
“बहुत अच्छा!” दादाजी ने कहा.
“देखो मैं अखबार पढ़ रहा हूँ.
अच्छा अब तुम दोनों
बाहर जाकर खेलो.”

फिर जेसी ने कहा, “जॉनी! ज़रा इधर आओ!
ज़रा यह आकर देखो!”
जेसी एक मधुमक्खी को देख रही थी.
मधुमक्खी एक फूल पर बैठी थी.

“तुम्हें लगता है क्या मधुमक्खी भी
कुछ खा रही होगी?” जेसी ने पूछा.
“काश मेरे पास भी एक मैगनीफायिंग
ग्लास होता,” जॉनी ने कहा.
“हो सकता है दादाजी कुछ समय के लिए
हमें अपना मैगनीफायिंग ग्लास दे दें,”
फिर वे दौड़कर घर में वापिस गए.

“दादाजी,” जेसी ने कहा.
“एक मधुमक्खी फूल पर बैठी है.
हम देखना चाहते हैं कि वो क्या कर रही है.
क्या हम आपका मैगनीफायिंग ग्लास
इस्तेमाल कर सकते हैं?”

“लगता है कि मैं आज अखबार नहीं पढ़ पाऊँगा.
यह लो मैगनीफायिंग ग्लास और
उससे मधुमक्खी को देखो.
अब मैं बाहर घूमने जा रहा हूँ.
पर दोपहर के खाने के समय तुम मुझे
मेरा मैगनीफायिंग ग्लास वापिस करना.”

मधुमक्खी अभी भी वहीँ फूल पर थी.
“ज़रा देखो, जेसी,” जॉनी ने कहा.
“ज़रा फूल को देखो.”
उन्हें यह दिखाई दिया :

फिर बच्चों ने मधुमक्खी को देखा.
उन्होंने मधुमक्खी को यह करते देखा :

"देखो, फूलों पर बहुत सारा पीले
रंग का पाउडर है!" जेसी ने कहा.
"अब वो पाउडर मधुमक्खी के पैरों पर
भी चिपक गया है!" जॉनी ने कहा.
"मधुमक्खी, उसका क्या करेगी?"

फिर उन्होंने दुबारा मधुमक्खी को देखा.
उन्होंने वो दिखाई दिया :

"मुझे मधुमक्खी का घुटना दिख रहा है,"
जॉनी ने कहा.
"देखो!"
पर तभी मधुमक्खी वहां से उड़ गई.

“दोपहर तक तो हमारे पास दादाजी का
मैगनीफायिंग ग्लास है,” जेसी ने कहा.
“शायद कुछ देर में हमें कोई
मक्खी दिख जाए.
उन्हें मक्खी तो नहीं मिली पर
जॉनी को कुछ और ज़रूर मिला.

“देखो इस चींटी को देखो!”
उसने जेसी से कहा.
फिर उन्होंने मैगनीफायिंग ग्लास
में से चींटी को देखा.

वो चींटी एक छोटी पहाड़ी पर चढ़ रही थी.
पहाड़ी के ऊपर एक छोटा छेद था.
वो चींटी उस छेद में घुसी.

“देखो!” जॉनी ने कहा.
“वो अब फिर से बाहर आ रही है!
वो छेद उसके घर का दरवाज़ा है.”
फिर चींटी पहाड़ी पर से उतरी
और कहीं और चली गई.

तभी उन्हें पहाड़ी पर चढ़ती
एक और चींटी दिखाई दी.
“देखो, जॉनी,” जेसी ने कहा.
“इस चींटी के मुंह में एक बिस्कुट का टुकड़ा है!
वो उसका भला क्या करेगी?”

उन्हें यह दिखाई दिया :

वो चींटी फिर पहाड़ी पर चढ़ी
और अपने घर के दरवाज़े पर गई.
बिस्कुट का टुकड़ा अन्दर गया.
चींटी दुबारा पहाड़ी के नीचे उतरी
और फिर एक बिस्कुट का टुकड़ा लाई.
वो फिर घर के दरवाज़े पर गई.
उसने बिस्कुट के टुकड़े को अन्दर फेंका.

"तुम दोनों क्या देख रहे हो?"
दादाजी ने पूछा.
"वो चींटी अपने घर में बिस्कुट का
टुकड़े ला रही है," जेसी ने कहा.
"दादाजी, आप भी देखें!"
फिर दादाजी ने भी देखा.

“तुम लोग यहाँ क्या कर
रहे हो?” माँ ने पूछा.
“चलो, दोपहर का खाना तैयार है!”
“नहीं माँ,” जेसी ने कहा.
“ज़रा इधर देखो! उधर देखो!
वो चींटी दुबारा फिर से पहाड़ी
पर चढ़ रही है!”

उन्होंने चींटी को बिस्कुट का टुकड़ा
पहाड़ी पर ले जाते हुए देखा.
इस बार वो टुकड़े को लेकर
सीधे अपने घर में ले गई!

“दादाजी,” जॉनी ने कहा.
“क्या हम दोपहर के खाने के
बाद भी आपका मैगनीफायिंग ग्लास
इस्तेमाल कर सकते हैं?”
“हम चींटियों को दुबारा देखना चाहते हैं,”
जेसी ने कहा.

“वाह!” जॉनी ने कहा.
“अब लगता है चींटी अपना
खाना खाएगी!”
फिर माँ ने कहा,
“चलो, अब हमारे खाने का
समय भी हो गया है!”
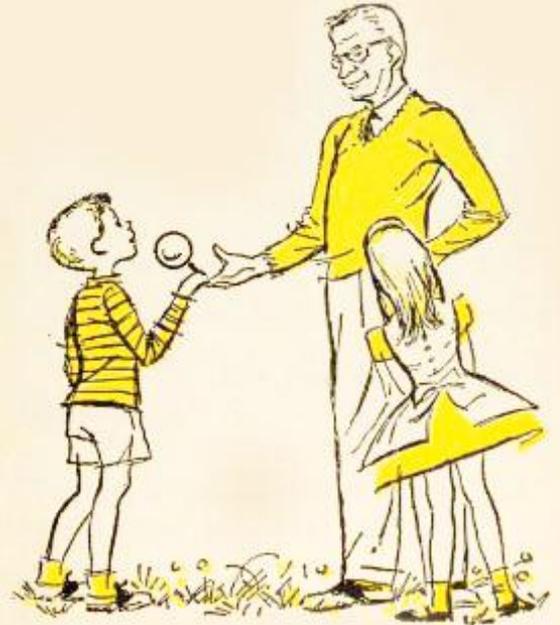
“नहीं,” दादाजी ने कहा.
“अब मैं तुम्हें मैगनीफायिंग ग्लास
नहीं दे सकते. मुझे उसकी ज़रुरत है.”
यह सुनकर जेसी बड़ी दुखी हुई.
जॉनी भी दुखी हुआ.
“सिर्फ एक बार और देखने के लिए?”
जॉनी ने कहा.
“नहीं,” दादाजी ने कहा.
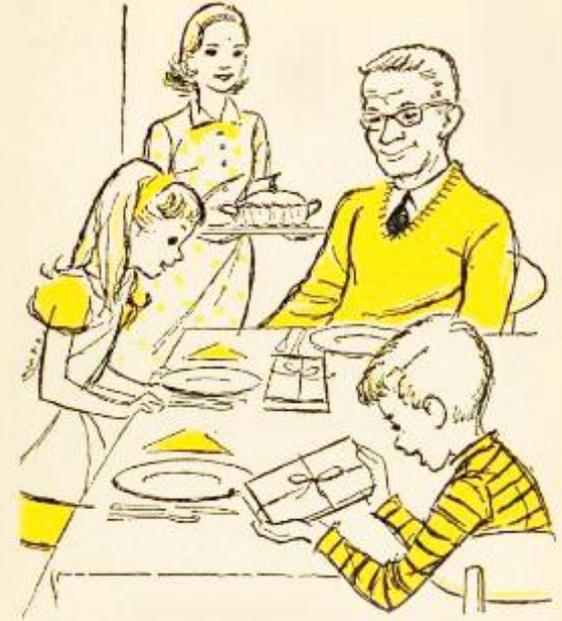
फिर सब लोग खाने को बैठे.
मेज़ पर जेसी को अपने लिए
एक डिब्बा दिखा.
जॉनी को भी अपने लिए
एक डिब्बा दिखा.

“जाओ, उन्हें खोलकर देखो,”
दादाजी ने कहा.

जॉनी ने अपना डिब्बा खोला.
उसमें एक मैगनीफायिंग ग्लास था.
“अरे वाह!” जॉनी चिल्लाया.

जेसी ने भी अपना डिब्बा खोला.
उसमें एक मैगनीफायिंग ग्लास था.
“अरे वाह दादाजी,!” जेसी चिल्लाई.

फिर वे दौड़कर दादाजी का
शुक्रिया अदा करने गए.
“अब हम आपको मक्खी की आँख
दिखा सकते हैं!”
“हम आपको मधुमक्खी का घुटना
भी दिखा सकते हैं,” जॉनी ने कहा.

“चलो अब मैं तसल्ली से

अखबार पढ़ सकता हूँ,” दादाजी ने कहा.

अंत